

ਬ੍ਰਾਦਰ ਮੈਨ੍ਯੁਏਲ ਮਿਨਿਸਟਰੀਜ਼ ਮਾਸਿਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਅਪ੍ਰੀਲ ੨੦੧੩

ਪਾਰਿਪੂਰਣ ਅਭਿ਷ੇਕ

ਇਸਤੇਮਾਲ ਹੋਨੇ ਯੋਗ ਬਨਾਤਾ ਹੈ। ਸਚਵਾਈ ਤੋਂ ਧਾਰਾ ਹੈ, ਕਿ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਕੇ ਰਾਜ੍ਯ ਮੈਂ ਹਰ ਏਕ ਕਾਰ੍ਯ ਕੇ ਲਿਏ ਅਭਿ਷ੇਕਿਤ ਕਿਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ, ਤਾਕਿ ਵੇਂ ਨਿੱਜੀ ਸੰਸਕ੍ਰਤੀ ਯਾਂ ਦੈਵਿਕਤਾ ਕੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਬਨ ਸਕੇ।

ਅਭਿ਷ੇਕ, ਧਾਰਾ ਮਨੁਥ ਕੋ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਕੇ ਕਾਰ੍ਯ ਔਰਤ ਤੁਨਕੇ ਰਾਜ੍ਯ ਕੇ ਲਿਏ

ਅਭਿ਷ੇਕ ਇਸ ਸ਼ਬਦ ਕਾ ਅਰੰਥ ਹੈ ਤੁਡੇਲਨਾ। ਲੋਗਾਂ ਕੋ ਅਭਿ਷ੇਕਿਤ ਕਿਯਾ ਜਾਤਾ

ਹੈ, ਤਾਕਿ ਵੇਂ ਨਿੱਜੀ ਸੰਸਕ੍ਰਤੀ ਯਾਂ ਦੈਵਿਕਤਾ ਕੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਬਨ ਸਕੇ।

ਇਸਤੇਮਾਲ ਹੋਨੇ ਯੋਗ ਬਨਾਤਾ ਹੈ। ਸਚਵਾਈ ਤੋਂ ਧਾਰਾ ਹੈ, ਕਿ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਕੇ ਰਾਜ੍ਯ ਮੈਂ ਹਰ ਏਕ ਕਾਰ੍ਯ ਕੇ ਲਿਏ ਅਭਿ਷ੇਕਿਤ ਕਿਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ, ਔਰਤ ਕੇ ਕੇਵਲ ਵੋ ਹੀ ਇਸੇ ਤੁਤਮ ਤਰਿਕੇ ਦੇ ਕਰ ਸਕਤਾ ਹੈ, ਜਿਸੇ ਇਸ ਕਾਰ੍ਯ ਕੋ ਕਰਨੇ ਦੇ ਲਿਏ ਅਭਿ਷ੇਕਿਤ ਕਿਯਾ ਗਿਆ ਹੈ।

ਹਮ ਪਾਰਿਪੂਰਣ ਅਭਿ਷ੇਕ ਕੇਵਲ ਤਥਾ ਪਾ ਸਕਤੇ ਹਨ, ਜਦੋਂ ਹਮ ਗਹਰੀ ਨੰਦ ਕੀ ਅਵਸਥਾ ਮੈਂ ਹੋਂਦੇ ਹਨ। ਵਰਨਾ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕਾ ਅਭਿ਷ੇਕ ਪਾਨਾ ਨਾਮੁਸਕਿਨ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਮਨੁਥ ਬਹੁਤ ਹੀ ਬੇਚੈਨ ਹੋਤਾ ਹੈ, ਔਰਤ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਕੋ ਆਪਨੇ ਜੀਵਨ ਮੈਂ ਕਾਰ੍ਯ ਕਰਨੇ ਦੀ ਅਨੁਮਤਿ ਨਹੀਂ ਦੇਤਾ। ਹਮੇਂ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਕੇ ਛੁਦਦ ਮੈਂ ਔਰਤ ਤੁਨਕੇ ਵਚਨ ਮੈਂ ਸਮਾਨਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਏਕ ਮਨੁਥ ਗਹਰਾਈ ਔਰਤ ਸਿਦ੍ਧਤਾ ਦੇ ਪ੍ਰਮੂੰ ਮੈਂ ਵਿਅਕਾਸ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਤਥਾ ਵਹ ਆਪਨੇ ਅੰਦਰ ਦੀ ਅਨਿਆਹੀ ਥੀਂਜ਼ ਕੀ ਅਵਸਥਕ ਥੀਂਜ਼ ਦੇ ਬਦਲ ਦੇਤਾ ਹੈ। ਠੀਕ ਐਸਾ ਹੀ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਨੇ ਅਦਮ ਦੇ ਸਾਥ ਕਿਯਾ। ਤਨਾਂਹੀਨੇ ਉਦੇ ਗਹਰੀ ਨੰਦ ਮੈਂ ਢਾਲਾ, ਫਿਰ ਉਦੀਂ ਇੱਕ ਪਸਲੀ ਨਿਕਾਲੀ ਔਰਤ ਉਦੀਂ ਹਵਾ ਕੀ ਰਚਾ, ਫਿਰ ਉਦੀਂ ਮਾਂਸ ਕੀ ਬੰਦ ਕਰ ਦਿਯਾ, ਔਰਤ ਆਖਿਰ ਅਦਮ ਦੇ ਸਾਮਨੇ ਹਵਾ ਕੀ ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਕਿਯਾ।

ਅਥ ਇਸ ਮੈਂ ਸਾਬਦੇ ਗੈਰ ਕਰਨੇ ਵਾਲੀ ਬਾਤ ਧਾਰਾ ਹੈ ਕਿ, ਪਵਿਤ੍ਰ ਸ਼ਾਸਤਰ ਕਹੀਂ ਮੀਂ ਹਮ ਦੇ ਯਹ ਨਹੀਂ ਕਹਦਾ ਕਿ ਅਦਮਨੇ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਦੇ ਗੁਜਾਰਿਸ਼ ਕੀ ਕਿ ਵੇਂ ਉਦੀਂ ਲਿਏ ਏਕ ਯੋਗ ਮਦਦਗਾਰ ਧਾਰਾ ਧਾਰਾ ਪੈਂਦੀ ਲੇ ਆਏ। ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਨੇ ਸ਼ਵਧਾਂ ਦੀ ਨਿਸ਼ਚਿਆ ਕਿਯਾ ਕਿ ਅਦਮ ਅਥ ਤੈਤਾਰ ਹੋ ਚੁਕਾ ਹੈ, ਔਰਤ ਉਦੀਂ ਹਵਾ ਦੀ। ਵੇਂ ਆਪਕੇ ਲਿਏ ਮੀਂ ਐਸੀ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਲੇਕਿਨ ਕਿਥਾ ਆਪ ਤੈਤਾਰ ਹੋ? ਕਿਥਾ ਆਪ ਵਹ ਸੁਣ ਸਕਦੇ ਹਨ ਜੀ, ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਆਪਦੇ ਕਹਨੇ ਦੀ ਕੋਣਿਕਾ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ? ਕਿਥਾ ਆਪ ਪਾਰਿਪੂਰਣਤਾ ਦੇ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਮੈਂ ਵਿਅਕਾਸ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ? ਜਦੋਂ ਆਪ ਇਨ ਸਾਰੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਨਿਸਦੰਦੇਤਾ ਦੇ "ਹੀਂ" ਮੈਂ ਜਵਾਬ ਦੇਂਦੇ ਹਨ, ਤਥਾ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਆਪਕੇ ਵੋ ਸਾਰੀ ਥੀਂਜ਼ ਦੇਂਦੇ ਹਨ ਏਕ ਮਿਨਿਟ ਮੀਂ ਦੇਰੀ ਨਹੀਂ ਕਰੋਗੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਜ਼ਰੂਰਤ ਆਪਕੇ ਹਨ।

ਪੁਨਰੁਤਥਾਨ ਦੀ ਲੋਗ

ਸਾਬਕੁਛ ਹਮਾਰੇ ਹੀ ਅੰਦਰ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਹਮ ਪੈਸਾ, ਸੰਪਤੀ, ਸੁਖਸੁਵਿਧਾਏਂ, ਵਿਭਿੰਨ ਜੈਂਸੇ ਦੁਨਿਆ ਦੀ ਥੀਂਜ਼ ਕੀ ਵਾਸਨਾ ਕੋ ਆਪਨੇ ਜੀਵਨ ਮੈਂ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਦੇ ਸਥਾਨ ਲੇਨੇ ਦੀ ਆਝਾ ਦੇਂਦੇ ਹਨ, ਤਥਾ ਅਨਜਾਨੇ ਮੈਂ ਹਮ ਹਮਾਰੇ ਦਿਲ ਔਰਤ ਮਨ ਦੀ ਢਾਰ ਕੀ ਪਾਪ ਕੇ ਲਿਏ ਖੋਲ ਦੇਂਦੇ ਹਨ। ਯਹ ਪਾਪ ਹਮਾਰੇ ਅੰਦਰ ਦੀ ਔਰਤ ਹਮਾਰੇ ਤੁਹਾਲੇ ਦੀ ਮਿਟਾਕਰ ਹਮੇਂ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਦੀ ਆਖਿਰਾਦੀਆਂ ਦੇ ਵਚਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ।

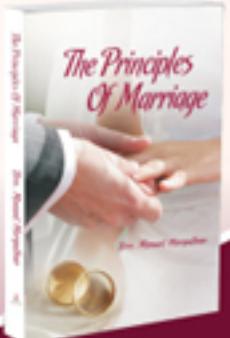
ਇਫਿਸਿਆਂ ੨:੬ ਕਹਦਾ ਹੈ, ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਨੇ ਹਮੇਂ ਮਸੀਹ ਧੇਖੂ ਮੈਂ ਰੱਚਾ ਤਠਾਧਾ, ਔਰਤ ਸਵਗੀਧ ਸਥਾਨਾਂ ਦੇ ਉਦੀਂ ਸਾਥ ਵੈਠਾਧਾ ਹੈ। ਮਸੀਹ ਦੀ ਸਾਥ ਹਮ, ਸਾਰੇ ਸ਼ਾਸਨ ਔਰਤ ਅਧਿਕਾਰ, ਸਾਮਰਥਿਆਂ ਔਰਤ ਪ੍ਰਮੁਤਵ ਦੇ ਦੂਰ ਸੰਵੱਤ੍ਰੇਤੇ ਸਥਾਨ ਪਰ ਵਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈ। ਜੀਂ ਹੀਂ, ਹਮ ਪੁਨਰੁਤਥਾਨ ਦੀ ਲੋਗ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਨੇ ਧੇਖੂ ਮਸੀਹ ਕੀ ਮੀਤ ਦੀ ਜੀਲਾਧਾ, ਤਥਾ ਤਨਾਂਹੀਨੇ ਹਮੇਂ ਮੀਂ ਤੁਨਕੇ ਸਾਥ ਜੀਲਾਧਾ ਹੈ।

ਇਸ ਪੁਨਰੁਤਥਾਨ—ਪਰਵ (ਈਸਟਰ) ਦੀ ਅਵਸਰ ਦੇ ਹਮਾਰੇ ਜੀਵਿਤ ਪ੍ਰਮੂੰ ਆਪਕੇ ਤੁਨਕੇ ਪਾਰਿਪੂਰਣ ਅਨੁਗ੍ਰਹ ਦੇ ਆਖਿਰਾਦੀਤ ਕਰੋ।

ਬ੍ਰਾਦਰ ਮੈਨ੍ਯੁਏਲ ਮੇਰਗੁਲਿਆਂ

ਧਾਰਾ ਲਿਖੀ ਗਈ 'ਦ ਪ੍ਰਿਨਸਿਪਲਸ ਑ਫ ਮੈਰੇਜ' ਇਸ ਕਿਤਾਬ ਦੇ ਲਿਖਾ ਹੁਆ ਅਕਤੂਬਰ ਹੈ। ਪਵਿਤ੍ਰ ਸ਼ਾਸਤਰ ਮੈਂ ਸ਼ਾਦੀ ਦੀ ਵਿਧਾ ਪਰ ਵਾਤ ਕਰਨੇ ਦੀ ਧੋਗ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਹੈ। ਅਸਲ ਮੈਂ, ਅਗਰ ਹਰ ਏਕ ਸ਼ਾਦੀਸ਼ੁਦਾ ਜੋਡਾ, ਸ਼ਾਦੀ ਦੀ ਸੰਬੰਧਿਤ ਨਿਯਮ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੁਲੋਖ ਪਵਿਤ੍ਰ ਸ਼ਾਸਤਰ ਮੈਂ ਗਿਆ ਹੈ, ਤਨਕਾ ਨਿ਷ਾਹ ਦੇ ਪਾਲਨ ਕਰੋਗੇ, ਤਥਾ ਤਮਾਮ ਸ਼ਾਦੀਆਂ ਆਨੇਵਾਲੀ ਸਾਰੀ ਮੁਸੀਕਤਾਂ ਦੇ ਵਚ ਸਕਤੀ ਹੈ। ਯਦਿ ਆਪਨੇ ਅਥ ਤਕ ਐਸਾ ਨਹੀਂ ਕਿਯਾ ਹੈ ਯਾ ਕਿ ਆਪ ਨਹੀਂ ਜਾਨਦੇ ਕਿ ਯੇ ਨਿਯਮ ਕਿਥਾ ਹੈ, ਤਥਾ ਵਹ ਕਿਤਾਬ ਆਪਕਾ ਮਾਰਾਈਦਾਕ ਬਨੇਗੇ।

ਇਸ ਕਿਤਾਬ ਦੀ ਧੂਮ ਦੇ ਲਿਏ ਆਗ ਦੀ ਮਾਲਾ ਨਾਗ ਦਰਜ ਕਰੋ।





क्या आप निसदीहता से बता सकते हों कि सुधारना क्या हासिल करती है? केसे कोई उसे संचालित करता है? और कौन ऐसा करने के योग्य है? क्या "रिपोर्ट करना" "शिकायत दर्ज करने" के समान है?

अनुभव यह बताता है, कि बहुत कम लोग हैं, जो जानते हैं, कि सुधारना कैसे दि जाती है, और उससे भी कम लोग हैं जो उसके सही कारण को जानते हैं। जरुरी है कि जिसे हम सुधारना देते हैं, वह उसके हीत में हो। जैसे एक पिता अपने बेटे को सुधारना देता है, ताकि आगे जाकर वह निजी और सामाजिक तौर पर बहतरीन और सदगुणी व्यक्ति बने। जो व्यक्ति सुधारना देता है, उसके लिए बहुत ही जरुरी है, कि वह इस बात का अनुमान लगाकर ही सुधारना दे की इसका असर अब और आनेवाले कल में रहेगा या नहीं।

मानवीय सुधारना

"सुधारना" जो केवल सुधारक के निजी कायदे के लिए हो वह सुधारना नहीं बल्कि तुकराना है। यह अपने अधिकार का दुरुपयोग करने के समान है। उत्तम सुधारना वह है, जो किसी व्यक्ति को एक बहतर इंसान बनाने में मदत करता है।

परमेश्वर के सुधारने का तरीका

परमेश्वर की सुधारना उनके वचन और मनुष्य के उद्धार पर आधारित है। नीतिवचन ३:१२ कहता है, "क्योंकि यहोवा जिससे प्रेम रखता है उसको अनुशासित करता है, जैसे कि पिता अपने बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है।" दैविक सुधारना का केवल एक ही मकसद है और वह है हमारे प्राण का उद्धार। प्राण का उद्धार और उसे बचाकर रखना यह एक बार की कोशिश नहीं है लेकिन यह किया हमें लगातार करते रहना है। प्राण के उद्धार का अर्थ है, स्वर्ग के योग्य बनना और इसी कारण परमेश्वर लगातार मनुष्य के भीतर कार्य करते रहते हैं।

लोगों को सुधारना देना यह बहुत ही निपुणता का कार्य है। प्रभु येशुने अंजीर के वृक्ष पर दोष लगाया कि वह आग में झोका जाएँ क्योंकि वह अनुत्पादक और फलदायक नहीं था। परंतु बास्तव में वे हम से यह कहना चाहते हैं, कि जो इन्सान पवित्र आत्मा के फलों को उत्पन्न नहीं करता जो प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं, वह अननंतकाल के दोष का सामना करेगा। हमे ऐसे चरित्र को अपने अंदर उत्पन्न करना है जिसका नजारिया प्राण का उद्धार हो और यहीं सुधारना देने का मुख्य उद्देश्य है।

"चरवाह" से मिलनेवाली सुधारना

जब पासटर किसी को सुधारते हैं, तो उनका इशारा उस व्यक्ति को परमेश्वर के

नजर में और उनके वचन में सही बनाना होता है, और सुधारना देने का यह सबसे उंचा दर्जा है। हो सकता है, कि हम पहले इस सुधारना को या इसके उद्देश्य को ना समझे, परंतु जब हम हमारे जीवन के मुश्किल दौर से गुरते हैं, उस समय यह सुधारना ही हमारी मदत करती है, कि हम निडर होकर और चार से इसका सामना करें, और तब हम उसकी तारीफ करते हैं। हर एक चरवाह अपने भेड़ के स्वभाव के आधार पर उसको सुधारता है, जिससे आप यह समझ सकते हो कि आपका चरवाह आपसे कितना प्यार करते हैं और यह भी समझोगे कि परमेश्वर भी हमे ऐसे ही सुधारते हैं।

परमेश्वर के सुधारने का ढंग

सुधारना देने में परमेश्वर बड़े ही निपुण है। योना की किताब इसका जिकरता है, परमेश्वर चाहते थे कि योना नीनवे नगर में जाकर लोगों को चेतावनी दे कि वे अपने पापों से पश्चाताप करें, परंतु ऐसा करने के बजाए वो तर्शीश भागजाना चाहता था, लेकिन परमेश्वर उसे सही मार्ग पर लाने के लिए एक बड़ी मछली को

भेजते हैं, जो उसे निगल जाती है। और अंत में वह नीनवे नगर में जाकर लोगों से पश्चाताप करने कहता है, वे उसकी बात मानकर पश्चाताप करते हैं और परमेश्वर की करुणा पाते हैं। परंतु योना परमेश्वर की करुणा और माफि से नाखुश होता है।

योना पूरब की ओर तम्बू बनाकर वह देखने लगता है कि नगर का क्या होगा, जब धूप उसे सताने लगती है तब यहोवा एक पेड़ उगाते हैं, जो उसे छाया देता है और योना भी उसे देखकर बहुत खुश होता है। दूसरे दिन परमेश्वर कीड़े को भेजते हैं, जो उस पेड़ को खाकर उसे सुखा देता है। फिर से धूप उसपर तीव्रता से गिरने लगती है और वह फिर से क्रोधीत होने लगता है क्योंकि उसे छाया देनेवाला पेड़ अब नहीं था। फिर परमेश्वर उसे यह कहते हुए सुधारते हैं, "जिस पेड़ के लिये तू ने कुछ परिश्रम नहीं किया, न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात में उगा, और एक ही रात में नष्ट भी हुआ; उस पर तू ने तरस खाई है। फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिसमें एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दाहिने-बाएँ हाथों का भेद नहीं पहचानते, और बहुत से घरेलू पशु भी उसमें रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ।"

और आखिर योनाने परमेश्वर के उद्देश्य को समझा।

हमारे परमेश्वर ऐसे ही हैं। और उनके पास बहुत से अद्भूत तरीके हैं, जिनके द्वारा वे हम सभी को सुधारते हैं।

- संपादकीय डेस्क





“मौत” के द्वारा “जीवन”... एक खूबसूरत
“आदान-प्रदान”

शालोम!

‘अनुग्रह’ जो आश्चर्यचकित करता है!

‘उल्हास’ जो शब्दों में व्यक्त नहीं किया जाता और जो
महिमा से परिपूर्ण है!

‘विश्वास’ जो आपको सारी चिंताओं से मुक्त करता है!

‘आश्वासन’ जो आशिर्वादित और अनंतकाल तक है!

अगर ‘आपने’ इसका अनुभव नहीं किया है, तो आपने

परमेश्वर के पुत्र का सामना नहीं किया या उन्हें जाना भी
नहीं है!

लेकिन अगर आपने किया है, तो इन खूबसूरत सच्चाईयों का अनुभव करने के बाद, आप परमेश्वर के पुत्र का पिछा करते हो, जो आपका सच्चा चरवाहा हैं। लेकिन आपके इस सफर में, आप इस दुनिया के आकर्षणों, या मास की वासना, या फिर जिस जिंदगी को आप जी रहे हैं, उसके अहंकार के जाल में, अगर फँसते हैं, तो हताश न होना।

अगर आप अपने आपसे कहते हैं “अरे, मैं मेरे प्रभू के लिए ‘वह’ नहीं त्याग सकता,” तो यह जानो: यह येशू के लिए कुछ त्यागने के बारे में नहीं है। लेकिन यह एक अदल बदल के बारे में है!

अगर आप बी. एम. एम. के सदस्य बनकर वास्तव में ‘पवित्र आत्मा में जीते’ हैं, तो आपने इस बात का अनुभव जरुर किया होगा, कि हम उनके बगैर बहुत सी चीजें नहीं कर सकते। लेकिन जैसे मैं येशू के साथ चलती हूँ, मैं देखती हूँ कि मैं बिना ‘पाप’ के जी सकती हूँ, लेकिन उनकी ‘शांति’ के बिना नहीं जी सकती। और जब मैं इस सच्चाई को भलिभाँती जानती हूँ, तो मैं अपने ‘पाप’ को उनकी ‘शांति’ के साथ बदलती हूँ।

और जैसे मैं उनका अनुभव गहराई से कर रही हूँ, तो मुझे यह अहसास हुआ है, कि मैं इस दुनिया के बीजों और वैभव के बगैर जी सकती हूँ, लेकिन उनके ‘अनुग्रह के धन’ के बिना नहीं। तो मैं परमेश्वर के अनुग्रह के धन को पाने के लिए इस दुनिया के वैभव को उनके साथ बदलती हूँ।

ऐसे ही मैं शारीरिक या सांसारीक चीजों को एक एक करके येशू की महिमा का और एक धन पाने के लिए बदलते रहती हूँ।

और अब, मेरे कमजोरीयों को बदलने के बाद मुझसे एक थिल्लाहट का स्वर निकलता है, कि “मैं शक्तिशाली हूँ!”

और मेरे गरीबी का बदलना मेरे होठों पर यह गीत ले आता है, जो धोषणा करता है, कि “मैं अमीर हूँ”

और मेरे गुलामी का बदलना मुझे खुशी से कूद कर यह थिल्लाने पर मजबूर करता है, कि “मैं आजाद हूँ”
क्योंकि जिसे भी “पुत्र” आजाद करता है वह सब में आजाद है!!!

तो अगर आप किसी ऐसी स्थिति में फँस जाओ जो आपकी अंतरात्मा को अस्वस्थ करता है कि “ऐसा कुछ है, जो मैं उनके ‘महिमा के धन’ के ऐवज बदल सकता हूँ। तो आप देखोगे की यह धन, दुनिया की सारी चीजों से बढ़कर और योग्य है!”

हल्लिलूब्बाह! तो हम उनके पुनः आगमन के लिए उन्हीं के अनुग्रह, आनंद और आजादी में तैयार हो जाएं।

मैं आपके साथ परमेश्वर के आनंद को बाँटती हूँ, जो हम सभी का सामर्थ्य है।

“जीवन की रोटी” और “रोटी को तोड़ना”

ये शूने खूद के बारे में कहा कि, “मैं जीवन की रोटी हूं”

ये ये शू हैं, जो निर्जीव पापीयों को जीवन देता है।

पापी स्वभाव में आप जो कुछ भी खाते हो, वह आपको मौत की ओर बढ़ाता है।

परंतु ये शू जो सच्ची रोटी है, जीवन प्रदान करता है। वचन के जरिए हम पर जाहिर किया गया है और पवित्र आत्माने इसे हमारे अंदर प्रभावकारी बनाया है।

जब हम एक साथ रोटी को तोड़ते हैं तब हम क्या करते हैं?

पवित्र शास्त्र हमे इसके अनेक स्पष्टीकरण देता है।

प्रेरितों २:४२-४७ कहता है, “और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। सब लोगों पर भय छा गया था क्योंकि प्रेरितों के द्वारा बहुत से अद्भुत कार्य और चिन्ह दिखाए गये थे। और सब विश्वासी इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे में थीं। वे अपनी—अपनी संपत्ति और सामान बेच—बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे। वे प्रतिदिन एक मन होकर खलिस्सियाँ में इकट्ठे होते थे, और घर—घर रोटी तोड़ते हुए आनंद और निष्कपट हृदय से भोजन किया करते थे, और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।”



उन्होंने अपने आपको

१. शिक्षणों
 २. संगति
 ३. रोटी तोड़ने
 ४. प्रार्थना
- में समर्पित कर दिया।

सारे विश्वासी:

१. एक साथ थे
२. सारी वस्तुएँ साझी थीं

३. संपत्ति और सामान बेच—बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे

४. खलिस्सियाँ में इकट्ठे होते थे

५. घर—घर में एक साथ रोटी तोड़ते

६. आनंद और निष्कपट हृदय से भोजन किया करते थे, और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे

“और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।”

यह परमेश्वर है जो प्रतिदिन हमारे साथ उन लोगों को जाझते हैं, जो उद्धार पाते हैं। तो इस पर जरूर मनन करो, और फिर आप जानोगे कि वे ऐसा कैसे और क्यों करते हैं।

— आगे जारी रहेगा....

The Year 2013

Is the year of the snake
Accepted by the Chinese
For their joy & good sake.
The sign of the fiery serpent
Can strike anywhere
The outcome of which

His plans we bear. (Numb 21:6-9, Jh 3:14,15,18)

It is said to be wise as a serpent (Matt. 10:16)

But see how the serpent went. (Gen. 3:14)

So, believe in “The Gospel”

And do not relent.

“You brood of vipers,”

Were told to some men (Matt. 3:7,8)

Who refused to believe

“The Good News” for them (Luke 1:45)

And the “Good News” is this

To believe in His Name (Jesus). Romans 10:9

To be your deliverer (Ps. 91:14)

That is why He came,

To give us life, grace & peace (Eph. 1:2)

To serve, and not for fame,

Yet trampling the cobra & snake (Ps. 91:13 & Gen. 3:15)

So for goodness sake,

Stay sober & awake (1 Peter 5:8)

Kids Corner



Noah's Ark Wordsearch



animal
ararat
ark
covenant
dove
flood
Genesis
gopher
ham
japheth
noah
rain
rainbow
raven
shem

DAILY SCRIPTURE READING-APRIL 2013

Date	Old Testament	Psalms	Proverbs	New Testament
1st April	Deut. Chp 25 & 26	Ps. Chp 39: 7-11	Ps Chp 13: 4-6	Lk Chp 6: 1-26
2nd April	Deut. Chp 27 & 28	Ps. Chp 39: 12-13	Ps Chp 13: 7-8	Lk Chp 6: 27-49
3rd April	Deut. Chp 29 & 30	Ps. Chp 40: 1-5	Ps Chp 13: 9-10	Lk Chp 7: 1-30
4th April	Deut. Chp 31 & 32	Ps. Chp 40: 6-12	Ps Chp 13: 11-12	Lk Chp 7: 31-50
5th April	Deut. Chp 33 & 34	Ps. Chp 40: 13-17	Ps Chp 13: 13-14	Lk Chp 8: 1-25
6th April	Joshua Chp 1 & 2	Ps. Chp 41: 1-13	Ps Chp 13: 15-16	Lk Chp 8: 26-56
7th April	Joshua Chp 3 & 4	Ps. Chp 42: 1-5	Ps Chp 13: 17-18	Lk Chp 9: 1-17
8th April	Joshua Chp 5 & 6	Ps. Chp 42: 6-11	Ps Chp 13: 19-21	Lk Chp 9: 18-36
9th April	Joshua Chp 7 & 8	Ps. Chp 43: 1-5	Ps Chp 13: 22-23	Lk Chp 9: 37-62
10th April	Joshua Chp 9 & 10	Ps. Chp 44: 1-3	Ps Chp 13: 24-25	Lk Chp 10: 1-24
11th April	Joshua Chp 11 & 12	Ps. Chp 44: 4-19	Ps Chp 14: 1-2	Lk Chp 10: 25-42
12th April	Joshua Chp 13 & 14	Ps. Chp 44: 20-26	Ps Chp 14: 3	Lk Chp 11: 1-28
13th April	Joshua Chp 15 & 16	Ps. Chp 45: 1-5	Ps Chp 14: 4-5	Lk Chp 11: 29-54
14th April	Joshua Chp 17 & 18	Ps. Chp 45: 6-17	Ps Chp 14: 6	Lk Chp 12: 1-31
15th April	Joshua Chp 19 & 20	Ps. Chp 46: 1-6	Ps Chp 14: 7-11	Lk Chp 12: 32-59
16th April	Joshua Chp 21 & 22	Ps. Chp 46: 7-11	Ps Chp 14: 12-13	Lk Chp 13: 1-22
17th April	Joshua Chp 23 & 24	Ps. Chp 47: 1-9	Ps Chp 14: 14	Lk Chp 13: 23-25
18th April	Judges Chp 1 & 2	Ps. Chp 48: 1-8	Ps Chp 14: 15-17	Lk Chp 14: 1-24
19th April	Judges Chp 3 & 4	Ps. Chp 48: 9-14	Ps Chp 14: 18-19	Lk Chp 14: 25-35
20th April	Judges Chp 5 & 6	Ps. Chp 49: 1-9	Ps Chp 14: 20-21	Lk Chp 15: 1-10
21st April	Judges Chp 7 & 8	Ps. Chp 49: 10-20	Ps Chp 14: 22-24	Lk Chp 15: 11-32
22nd April	Judges Chp 9 & 10	Ps. Chp 50: 1-6	Ps Chp 14: 25-27	Lk Chp 16: 1-31
23rd April	Judges Chp 11 & 12	Ps. Chp 50: 7-15	Ps Chp 14: 28	Lk Chp 17: 1-19
24th April	Judges Chp 13 & 14	Ps. Chp 50: 16-23	Ps Chp 14: 29	Lk Chp 17: 20-37
25th April	Judges Chp 15 & 16	Ps. Chp 51: 1-6	Ps Chp 14: 31-32	Lk Chp 18: 1-23
26th April	Judges Chp 17,18 & 19	Ps. Chp 51: 7-11	Ps Chp 14: 33-35	Lk Chp 18: 24-43
27th April	Judges Chp 20 & 21	Ps. Chp 51: 12-19	Ps Chp 15: 1-3	Lk Chp 19: 1-27
28th April	Ruth Chp 1 & 2	Ps. Chp 52: 1-5	Ps Chp 15: 4-5	Lk Chp 19: 28-48
29th April	Ruth Chp 3 & 4	Ps. Chp 52: 6-9	Ps Chp 15: 6-7	Lk Chp 20: 1-26
30th April	1 Samuel Chp 1,2 & 3	Ps. Chp 53: 1-6	Ps Chp 15: 8-11	Lk Chp 20: 27-47

गवाहियाँ

ग वा हि याँ



बोरीबली की सब्जीमंदी में मेरी दुकान है। कुछ रविवार पहले, मैं अपनी सारी सब्जियाँ मंदी में बैसे ही छोड़कर ब्रदर मैन्युएल की सेवकाई द्वारा आयोजित रविवार के सब्ज की सभा में आया था। और जैसे मैं प्रार्थना कर रहा था, उसी समय नगरपालीका की तीन गाड़ियाँ मंदी में आयी थीं और सभी लोगों के चीजों को जब्त कर रहे थे। लेकिन मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उन लोगों ने ना तो मेरी सब्जीयों को छूआ और नाहीं मेरी दुकान को। मैं यह भी गवाही देना चाहता हूँ कि हाल ही में जब मैं एक पुल पार कर रहा था, तब अचानक मेरे पैरों की मौसिपेशियाँ ऐठ गयी, लेकिन जैसे ही मैंने अपने पैरों पर येशू के लहू को लगाया और प्रार्थना की तो कुछ ही क्षणों में मेरा पैर ठीक हो गया। मैं येशू मसीह और ब्रदर मैन्युएल को धन्यवाद देता हूँ उन सारे आशिर्वादों के लिए जो मैंने उन से पाए हैं।

—बालू नागरे



पिछले तीन सालों से, मैं ब्रदर मैन्युएल की सेवकाई द्वारा आयोजित प्रार्थना सभाओं में आ रहा हूँ और तब से मेरे व्यवसाय में बहुत ही बढ़ीती हुई है। जब मैं पहली बार इस सेवकाई में आया था, तब मेरे पास केवल ३० ही कर्मचारी थे। और अब मैं ६०० लोगों को रोजगार दे रहा हूँ। मेरे व्यवसाय के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण लायसंस चाहिए था और जिसे पाने के लिए मैंने बहुत ही संघर्ष किया। फिर मैंने ब्रदर मैन्युएल से इस बारे में बात की। और तुरंत उसके बाद ही मुझे वह लायसंस मिल गया। मेरा व्यवसाय भी उन्नति कर रहा है। साथ ही मेरे निजी जीवन में भी अद्भुत बदलाव हो रहा है। मैंने शराब पिना छोड़ दिया और पवित्र शास्त्र पढ़ना शुरू किया है। और अब मेरे हृदय और परिवार में बहुत ही शांति है। मेरा विश्वास है, कि परमेश्वर इस सेवकाई द्वारा बहुत ही महान घमत्कार करेंगे। मैं परमेश्वर को उनकी करुणा और अनुग्रह के लिए धन्यवाद देता हूँ।

—स्टेनी बारदेसकर



मैं बहुत सालों से ब्रदर मैन्युएल की सेवकाई (बी. एम. एम.) का हिस्सा हूँ। प्रभु के पास आने से पहले, शैतान मेरे जीवन में बहुत ही सामर्थ्यशील था। मैं धूम्रपान करता और शराब पिता था, अन्य खुदाओं की पूजा करता था, और खलिलियाँ में मोमबत्ती भी जलाया करता था। परंतु मुझ में कोई जीवन ही नहीं था। जब मैं बी. एम. एम. में आया, तब मैंने अपने आपको येशू के हवाले कर दिया। परमेश्वरने मुझे मेरी सारी कमजोरियाँ दिखाई, और जीवन के बो भाग भी जहा मैं कम पढ़ रहा था। परमेश्वरने मुझे सो कहा "अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ रहू तो तुम्हे मेरे साथ रहना होगा।" अब मैं, येशू में एक अच्छा इन्सान हूँ। मैंने अपने जीवन की सारी बाँतें ब्रदर को बताईं क्योंकि कवूलात करना बहुत ही जरूरी है। अगर आप अपने दिल में पाप रखते हों, तो वह कभी भी नहीं जाएगा। हमें येशू के लिए अपने दिल में जगह बनानी ही है। और केवल तब हम शैतान को दूर भगा सकते हैं। ब्रदर मैन्युएलने मुझे पर प्रार्थना की और मुझे येशू के लहू में प्रार्थना करना सिखाया। तब से, परमेश्वरने मुझे भरपूरता से आशिर्वादित किया है। मैंने एक बच्चे के लिए प्रार्थना की और उन्होंने मुझे दो बच्चों से आशिर्वादित किया। मुझे ऐसा महसूस हुआ है, जैसे कि जीवन दीड़पथ पर हवाई जहाज के समान है, जो नरक की ओर जा सकता है, या तो स्वर्ग की ओर भी। फैसला हमारा है। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ उन सारी चीजों के लिए जो उन्होंने मेरे लिए की है।

—मारशेल डिमेलो (शारजाह)

visit
www.rhemamusicacademy.com
 Register today for the May 2013
Sound Of Music
 Knowledge and Development Programme
 contact Bro. Stephen - 9322257658 or Bro. Bosco - 9323593611

ट्रिटीट और शुभसमाचार घोषणा

त्रुधार

इंडियन ऐश्युकेशन सोसायटी (I.E.S.)
 नागिक सभा गिरा
 शिलावाटी हस्पताल के सामने,
 बांद्रा (एश्वम), मुंबई-४०००२०, इंडिया
 समय: शाम ४:०० बजे

मुख्यकार्यालय

एस-४, ल्यू नाइल अपार्टमेंट्स
 प्लॉट नंबर ३९, बरोडा रोड
 बांद्रा (एश्वम),
 मुंबई-४०००२०, इंडिया
 फोन नं.: +९१ २२ २४००२००९

गोवा घोषणा

अप्रिल १२-१४, २०१३
 भारत
 पी.ओ.बोक्स १६६४५
 मुंबई ४०००१० भारत
दुबई
 पी.ओ.बोक्स २०८८०
 फोन नं.: +९६६४०८४००४९०

युवकों की सभा

अप्रिल १८, २०१३
 भारत
 पी.ओ.बोक्स १६६४५
 मुंबई ४०००१० भारत

Live in the Spirit
 BRO. MANUEL MINISTRIES